करवा चौथ भारत के हिंदू धर्म के महत्वपूर्ण त्यौहारों में से एक है, जिसे विशेष रूप से विवाहित महिलाएं अपने पति की लंबी आयु और सुखद दांपत्य जीवन की कामना के लिए मनाती हैं। यह त्यौहार हर साल कार्तिक मास की चतुर्थी तिथि को मनाया जाता है। इस दिन महिलाएं पूरे दिन निर्जल व्रत रखती हैं और रात में चंद्रमा को अर्घ्य देकर व्रत का समापन करती हैं। इस पर्व का प्रमुख आकर्षण है करवा चौथ की कथा, जो महिलाओं को इस व्रत की महत्वता और पूजन विधि को समझने में मदद करती है।

करवा चौथ की पौराणिक कथा

करवा चौथ से जुड़ी कई कथाएं हैं, जिनमें से सबसे प्रचलित कथा वीरवती की है। इस कथा के अनुसार, वीरवती नामक एक महिला का विवाह एक वीर और पराक्रमी राजा के साथ हुआ था। अपनी पहली करवा चौथ के दिन, वीरवती ने पूरे दिन बिना जल और अन्न ग्रहण किए उपवास रखा। वह अपने मायके में थी, और शाम होते-होते उसे अत्यधिक भूख और प्यास लगने लगी।

उसके सात भाई, जो अपनी बहन की यह स्थिति देख नहीं पाए, ने उसे भोजन कराने का उपाय निकाला। उन्होंने एक पेड़ के पीछे से दर्पण की सहायता से झूठा चंद्रमा दिखा दिया। वीरवती ने इस चंद्रमा को देखकर व्रत तोड़ दिया, लेकिन जैसे ही उसने पहला निवाला खाया, उसे यह आभास हुआ कि उसके पति की मृत्यु हो गई है।

यह जानकर वीरवती अत्यंत दुखी हुई और भगवान से प्रार्थना करने लगी। उसकी प्रार्थनाओं से प्रभावित होकर देवी माँ प्रकट हुईं और उन्होंने वीरवती को बताया कि उसने व्रत गलत तरीके से तोड़ा था, इसलिए यह घटना घटी। देवी माँ ने वीरवती को वर्ष भर करवा चौथ व्रत विधिपूर्वक करने का उपदेश दिया, जिससे उसके पति को पुनः जीवन प्राप्त हो सके। वीरवती ने देवी माँ की आज्ञा का पालन किया और अगली करवा चौथ को पूरी श्रद्धा और निष्ठा से व्रत किया। अंततः उसके पति को पुनः जीवन प्राप्त हुआ।

इस कथा के माध्यम से महिलाओं को व्रत की पवित्रता और निष्ठा का महत्व समझाया जाता है।

करवा चौथ व्रत की विधि

करवा चौथ के दिन महिलाएं सुबह सूर्योदय से पहले उठकर सरगी ग्रहण करती हैं। सरगी में हल्का और पोषण युक्त भोजन होता है, जिसे महिलाएं अपनी सास द्वारा प्राप्त करती हैं। इसके बाद महिलाएं पूरे दिन बिना अन्न और जल ग्रहण किए व्रत का पालन करती हैं।

शाम के समय सभी महिलाएं एकत्रित होती हैं और करवा चौथ की पूजा करती हैं। इस पूजा के दौरान करवा चौथ की कथा सुनी जाती है, और महिलाएं करवा (मिट्टी का बर्तन) में जल भरकर, उसके ऊपर मिठाई रखकर देवी माँ की पूजा करती हैं।

चंद्रमा के उदय होने के बाद, महिलाएं छलनी के माध्यम से पहले चंद्रमा और फिर अपने पति का दर्शन करती हैं। इसके बाद वे अपने पति के हाथों से जल और अन्न ग्रहण करती हैं और व्रत का समापन करती हैं।

करवा चौथ का महत्व

करवा चौथ केवल व्रत रखने तक ही सीमित नहीं है, यह त्यौहार पति-पत्नी के बीच के प्रेम और विश्वास को और भी मजबूत बनाता है। इस दिन महिलाओं की आस्था और प्रेम का प्रतीक मानी जाती है। करवा चौथ का व्रत केवल पति की लंबी उम्र की कामना के लिए ही नहीं, बल्कि यह दांपत्य जीवन की सुख-शांति और आपसी समझ को भी बढ़ावा देने वाला है।

इसके अलावा, करवा चौथ के दिन महिलाएं पारंपरिक परिधानों में सजती हैं, जिसमें मुख्यतः लाल, पीले और हरे रंग की साड़ियों का विशेष महत्व होता है। यह दिन सौंदर्य और साज-श्रृंगार का भी दिन होता है, जिसे महिलाएं पूरे आनंद और उल्लास के साथ मनाती हैं।

करवा चौथ की अन्य कथाएं

हालांकि वीरवती की कथा सबसे प्रमुख मानी जाती है, लेकिन इसके अलावा भी कई अन्य कथाएं हैं जो करवा चौथ से जुड़ी हुई हैं।

1. कथा करवा और उसके पति की**:**

करवा नाम की एक महिला अपने पति की लंबी आयु के लिए करवा चौथ का व्रत करती थी। एक दिन उसके पति को नदी में स्नान करते समय एक मगरमच्छ ने पकड़ लिया। करवा ने अपने पति की रक्षा के लिए भगवान से प्रार्थना की। भगवान ने उसकी निष्ठा और प्रेम को देखकर मगरमच्छ को मार दिया और उसके पति की जान बचाई। इस प्रकार करवा का व्रत पति की रक्षा और दीर्घायु के लिए अटूट विश्वास का प्रतीक बना।

2. सत्यवान और सावित्री की कथा**:**

सत्यवान की पत्नी सावित्री ने भी अपने पति की जान बचाने के लिए कठिन व्रत और तपस्या की थी। सावित्री की निष्ठा और प्रेम के कारण यमराज को सत्यवान को पुनर्जीवित करना पड़ा। यह कथा भी करवा चौथ की आस्था और निष्ठा को प्रकट करती है।

करवा चौथ**:** आधुनिक परिप्रेक्ष्य में

आज के समय में करवा चौथ केवल एक धार्मिक त्यौहार नहीं, बल्कि यह फैशन और सामाजिक कार्यक्रम का हिस्सा भी बन गया है। आधुनिक महिलाएं भी इस व्रत को पूरी श्रद्धा और आस्था के साथ मानती हैं, चाहे वे कार्यरत हों या गृहिणी। इसके अलावा, कई स्थानों पर पुरुष भी अपनी पत्नियों के साथ व्रत रखते हैं, जो पति-पत्नी के बीच के संबंध को और भी सशक्त बनाता है।

आजकल करवा चौथ के दौरान बड़े-बड़े आयोजन होते हैं, जिसमें महिलाएं सज-धजकर एक-दूसरे के साथ समय बिताती हैं, और यह त्यौहार एक सामाजिक उत्सव का रूप ले चुका है।

निष्कर्ष

करवा चौथ का व्रत केवल धार्मिक और पौराणिक मान्यताओं से जुड़ा हुआ नहीं है, बल्कि यह पति-पत्नी के बीच के प्रेम, विश्वास और समर्पण का प्रतीक है। यह व्रत महिलाओं को यह विश्वास दिलाता है कि उनके द्वारा किए गए प्रयास और आस्था उनके परिवार के लिए कल्याणकारी होंगे। करवा चौथ की कथा, पूजा विधि और इससे जुड़े रीति-रिवाज हमें यह सिखाते हैं कि प्रेम और विश्वास की डोर सबसे मजबूत होती है, जो किसी भी कठिनाई को पार कर सकती है।

इस त्यौहार को मनाते समय महिलाओं के चेहरे पर दिखने वाली प्रसन्नता, आस्था, और समर्पण न केवल इस पर्व की पवित्रता को बढ़ाते हैं, बल्कि यह त्यौहार पूरे समाज के लिए एक सकारात्मक संदेश भी देता है।

प्रश्नोत्तरी

प्रश्न **1**: करवा चौथ किस मास में मनाया जाता है?

उत्तर: करवा चौथ कार्तिक मास की चतुर्थी तिथि को मनाया जाता है।

प्रश्न **2**: करवा चौथ की प्रमुख कथा किसकी है?

उत्तर: करवा चौथ की प्रमुख कथा वीरवती की है।

प्रश्न **3**: करवा चौथ का व्रत कौन रखता है?

उत्तर: करवा चौथ का व्रत विवाहित महिलाएं अपने पति की लंबी आयु और सुखद दांपत्य जीवन की कामना के लिए रखती हैं।